



ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी

एक ऐसी जीवनपद्धति है
जो किसी जीव को, चाहे वो
भूमि, जल अथवा वायु का हो
भय, पीड़ा अथवा मृत्यु नहीं पहुँचाती

वर्ष IX अंक 1, बसंत 2017

करुणा-मित्र

ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत की पत्रिका
प्राणी अधिकारों के लिए अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक धर्मार्थ ट्रस्ट

सम्पादकीय

जल्लीकट्टू: पारंपरिक खेल या मनुष्यों और प्राणियों की जिंदगी से खिलवाड़?

गुजराती में एक कहावत है कि मेंढक की जान जाती है और बच्चों का खेल होता है। कुछ यही स्थिति तमिलनाडु में जल्लीकट्टू नामक खेल में सांड के साथ हो रही है। बी.डब्ल्यू.सी. के सदस्यों के लिए जल्लीकट्टू कोई अपरिचित संज्ञा नहीं है। समय समय पर हम तमिलनाडु में पोंगल के पर्व के दौरान आयोजित इस खेल के आयोजन के कारण प्राणियों पर होने वाली क्रूरता की बात कहते आये हैं। एनिमल वेलफेयर बोर्ड के साथ प्राणी अधिकार के लिए कार्यरत कुछेक संस्थाओं ने मिल कर इस विषय में बार बार शासकों और न्यायालयों से गुहार की थी कि इस खेल के दौरान पशुओं पर होने वाली क्रूरता के चलते इन पर रोक लगनी चाहिये। इन सभी के चलते सर्वोच्च न्यायालय ने ७ मई २०१४ को इस खेल को सर्वथा प्रतिबंधित कर दिया। उक्त निर्णय देते समय सर्वोच्च न्यायालय ने निरीक्षण किया था कि जल्लीकट्टू खेल के दौरान सांड का प्रयोग करना सांड के लिए हानिकर है, फलतः यह कार्य प्रिवेंशन ऑफ़ क्रुएल्टी एक्ट के तहत अपराध बनता है।

हम मानते हैं कि यह खेल तमिलनाडु का प्राचीन व पारंपरिक खेल है। परन्तु, इस खेल के दौरान निरीह सांड पर बहुत सितम बरसाए जाते हैं। इस खेल में सांड को वश में कर प्रतियोगी मनुष्य स्वयं को शूरवीर साबित करने को लालायित होता है। सांड स्वभावतः आक्रामक प्राणी नहीं है, इस लिए उसे उकसाने के लिए कुछेक स्थानों पर उसकी आँखों में मिर्च पाउडर डाला जाता है, या फिर रात भर उसे जबरन् शराब पिलाई जाती है। नतीजतन, वह इतना आक्रामक बन जाता है कि न केवल उस प्राणी की, बल्कि, सामनेवाले प्रतिभागी मनुष्य की जान तक जाने का खतरा रहता है। प्रति वर्ष दोनों तरफ कई मौतें होती हैं। वर्ष २०१० से २०१४ के दरमियान १,१०० लोग चोटग्रस्त होने



जल्लीकट्टू २०१७ में अलंगनल्लुर में मदोन्मत्त सांड। सांड के सींग पर बंधी कुछेक पैसों की थैली को पाने के लिये सांड के सींग से भिड़ कर जान जोखिम में डाल रहे युवा।
तसवीर सौजन्य: M Lakshman/AP

की खबर है, जब कि १७ लोग मारे गए थे। पिछले दो दशक में २०० से भी अधिक लोगों की मौत इस घातक खेल के कारण होना दर्ज हुआ है। चोटग्रस्त और मृत्युग्रस्त सांड की तो कोई गिनती ही नहीं है इसमें। इस वर्ष २०१७ के

पोंगल पर्व के दौरान सर्वोच्च न्यायालय के स्थगन आदेश को उलटाने के तमिलनाडु राज्य सरकार द्वारा जारी अध्यादेश के चलते केवल ५ दिनों में हुए जल्लीकट्टू खेल के दरमियान ४ लोगों की मौत हुई और १७४ लोग चोटग्रस्त हुए, जिन में से ५७ को अस्पताल में ले जाया गया।

परंपरा के विरुद्ध किसी का भी विरोध नहीं हो सकता है। परन्तु, उस परंपरा के निर्वाह में यदि किसी मनुष्य/निरीह प्राणी पर क्रूरता बरसाई जाए या उसकी जान जाए तो यह कहाँ तक न्यायोचित है ? सांडयुद्ध के उदाहरण विश्व के अन्य देशों में भी मिलते हैं। रोम का इतिहास ऐसी कहानियों से भरा पड़ा है। लेकिन अब वे इतिहास के पन्नों पर ही देखी-सुनी जा सकती हैं। केनरी आईलैंड में सदियों तक यह परंपरा चलने के बाद वहां के शासन ने उस खेल पर सदा के लिए १९९१ में प्रतिबंध लगा दिया। अर्जेन्टीना, सोनोरा, गुरेरियो और चोहाउलिया में भी बुलफाइट प्रतिबंधित हो गई है। केटलोनिया का किस्सा उल्लेखनीय है। केटलोनिया की संसद ने बुलफाइट की सदियों पुरानी क्रूर परंपरा का १ जनवरी २०१२ से अंत करने का निर्णय किया। अक्टूबर २०१६ में वहां के उच्च न्यायालय ने उक्त परंपरा को संसद के निर्णय को उलटाते हुए परंपरा को चालु रखने का फैसला दिया। परन्तु, वहां का राजद्वारी नेतृत्व उस क्रूर परंपरा को पुनर्जीवित नहीं करने के लिये कटिबद्ध है। हमारे देश से सर्वथा विपरीत स्थिति!

क्यों न हम भी सभी जीवों के सहजीवन के आदर्श को सर-आँखों पर चढाते हुए एक स्वस्थ परंपरा शुरू करें व दुनिया को अपनी जीवदया विषयक प्रकृति का भी परिचय दें?

भरत कापडीआ

संपर्क: editorkm@bwcindia.org

स्याही

जीवविज्ञान विषयक और जैविक रंगद्रव्य और नैसर्गिक रंगमसालों का प्रयोग स्याही बनाने में होता है, अतः इसके प्राणिज होने की संभावना रहती है, कहती हैं निर्मल निश्चित।

मूल रूप से स्याही जलीय, प्रवाही, लेई (पेस्ट), और पाउडर के स्वरूप में उपलब्ध है। इसमें रंग, बाइंडर, एडिटिव और वाहक (करियर) निहित हैं। हालाँकि, ये घटक द्रावक, रंगद्रव्य, रंगने का मसाला, राल, चिकनाई, सोल्युबिलाइज़र, आर्द्रक-सर्फेक्टेंट, कणिकीय पदार्थ-पार्टीक्युलेट मेटर, प्रतिदिप्तक-फ्लूओरेसर, मोम, शुष्कताकारक और अन्य पदार्थ से भी बन सकते हैं। स्याही रंगद्रव्यों और रंग के मसालों से बनाई जाती है, जोकि प्राणिज हो सकते हैं। उदा., कीट, सीप, ऑक्टोपस, गिरगिट और घोंघे। प्राणी अथवा वनस्पति कोशिका से बने रंगद्रव्य या रंग को जैव या जैविक कहते हैं। जबकि रंग के मसाले की स्थिति में उन्हें प्राकृतिक मसाला कहा जाता है। अतः जैव और जैविक रंगद्रव्य दोनों, साथ ही प्राकृतिक मसाले, जिनका प्रयोग स्याही बनाने में होता है, प्राणिज हो सकते हैं।

जेल स्याही अधिक चिपचिपी और मोटी होती है। इसके रंगद्रव्य आदर्श रूप से कोपरथेलोसिएनिन और आयरन ऑक्साइड होते हैं। जेल पानी और झेन्थन गोंद सरीखे बायोपोलिमर के सम्मिश्रण से और पोलिक्रीलेट थिकनर से बनती है।

बोलपवाइंट पेन में घुले हुए रंग मसाले आधारित लेई स्याही का अल्कोहोल द्रावक, कार्बन ब्लेक और/या टाईटेनियम डायोक्साइड (काले या सफ़ेद खनिज रंगद्रव्य) के शोषित अणु



को परस्पर से पोलिमर के माध्यम से विघटित किया जाता है। इस द्रावक से स्याही प्रवहमान होती है।

फाउंटन पेन और प्रवाही-स्याही रोलर-बोल पेन के निर्माण में जल आधारित द्रावक के साथ घुले हुए रंग मसालों का प्रयोग होता है। यह स्याही टेनिक, गेलिक और कमज़ोर हाईड्रोक्लोरिक तेज़ाब का लौह नमक, फिनोल और नीले/काले रंगद्रव्य का सम्मिश्रण हो सकती है। इस में शुष्कता एजेंट, आसंजन (चिपकाव) सहायक, रंग विकासक अथवा परिरक्षक (प्रिज़र्वेटिव) भी हो सकते हैं।

मुद्रण के लिए प्रयुक्त स्याही जैसी कुछ स्याही गाढ़ी बनाई जाती हैं।

प्रिन्टर के लिए प्रयुक्त अधिकांश इन्क कार्ट्रिज के निर्माण में किसी प्राणिज पदार्थ का उपयोग नहीं होता है। हालाँकि, नये स्याही संघटक के परीक्षण के लिए अथवा उसे अवशेष के रूप में वर्गीकृत करने के लिए प्राणियों को काम में लाया जाता है। ह्युलेट पेकार्ड कंपनी ने यह स्वीकारा है।

हाइलाइटर पेन या मार्कर में तेल आधारित स्याही का प्रयोग होता है। यह काफी धुंधली और अपने नीचे रंगों का स्तर रखती है। लाक्षणिक पारदर्शी हाईलाइटर का दृष्टान्त पीला फ्लूरेसेंट है, जोकि, पायरेनिन, पानी में घुलनशील रसायन रंग-मसाले के साथ रंगा जाता है। इस में काले रंग का भी प्रयोग होता है, जोकि, सूचना को छिपाता है। (पीला इस लिए लोकप्रिय है, क्योंकि, ज़ेरोक्स के समय इसकी छाया नहीं उभरती है। काले समेत अन्य रंग के कारण लिखित मेटर ढक जाता है।



करेक्शन इन्क एवं फ्लूइड (द्रव पदार्थ) में धुंधले सफ़ेद पदार्थ का प्रयोग होता है, जिससे कि विषयवस्तु को आवृत्त किया जा सके। नेलपोलिश की भांति यह पदार्थ भी लगाने पर शीघ्र ही भांप बन कर उड़ जाता है। ऐसे कुछ उड़नशील जैविक मिश्रण मनुष्यों के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं। इसके दुरुपयोग, विशेषकर किशोरों के द्वारा सस्ते नशीले अंतः श्वसक (इन्हेलेंट) के रूप में टालने के लिए भारत सरकार ने बोतल के रूप में करेक्शन फ्लूइड और नेलपोलिश रिमूवर की खुदरा बिक्री पर पाबंदी लगा दी है। अतः अब करेक्शन फ्लूइड सूखने में अधिक बिना रासायनिक सोल्वेंट (जिसके इसे दो बार लगाने की आवश्यकता है) के समय लगता है और उपलब्ध हैं।



फेल्ड टीप पेन में टोल्युएन और ज़ायलिन सोल्वेंट जैसे गाढ़ सुगंध वाले जैविक मिश्रण का प्रयोग होता था। परन्तु, अब यह अल्कोहोल से निर्मित होती है। पर्मानेंट मार्कर, जिससे कांच, प्लास्टिक, लकड़ी, धातु और पत्थर पर लिखा जाता है, सालों चलती है। इसमें उड़नशील जैविक मिश्रण का प्रयोग होता है।



अदृश्य अथवा गायब होने वाली स्याही बच्चों के खेलने वाली डिकोडर पेन के साथ प्रयुक्त होती है। यह स्याही जासूसी व्यवसाय में सुरक्षा स्याही के रूप में भी प्रयुक्त होती है। कुछेक गर्मी में विकसित की जाकर लिटमस पेपर की भांति काम करती हैं। अन्य रासायनिक प्रतिक्रिया से बन कर अल्ट्रावायोलेट प्रकाश में तेज़ चमकती हैं। पहली वाली में खून के सीरम के समान द्रव पदार्थ और अन्य घटक, जैसे कि शहद, मद्य एवं दूध सरीखे प्राणिज पदार्थ प्रयुक्त होते हैं। कोला, साबुन का पानी, शक्कर, नीबू और अन्य जूस का प्रयोग तक हो सकता है।

इण्डिया/काली अमिट स्याही में बाँधने वाले पदार्थ के रूप में लाख का प्रयोग होता है। अनन्य बैंगनी अमिट स्याही, जिससे मतदाता की ऊँगली पर निशान किया जाता है (जो बाद में सूख कर काली हो जाती है), भारत में निर्वाचन आयोग के लिए बनाई जाती है। यह लाख, रंग-मसालों, रसायन, सुगंधी द्रव्य, बायोडाइड और सिल्वर नाइट्रेट (७-२५%) के मिश्रण से मायसोर पेंट्स एण्ड वार्निश के द्वारा बनाई जाती है। इसे पूर्व में मायसोर लाख एण्ड पेंट्स के नाम से जाना जाता था। इसे बनाने की फार्मूला गुप्त रूप से सुरक्षित है।

रेंगने वाले कीटक लाख, कोषिनिल, कर्मिज़से लाल रंग-मसाले बनते हैं। परन्तु, इण्डिया इन्क में लाख का प्रयोग बाँधने वाले पदार्थ के रूप में होता है, जिससे कि सूखने के बाद स्याही दीर्घजीवी होती है।

२०१४ में १६ वीं लोकसभा चुनावों के लिए उपर्युक्त कंपनी ने २१,६५,००० लीटर अमिट स्याही की आपूर्ति की थी। ५ मि. लि. की बोतल में समाविष्ट स्याही ३५० मतदाताओं के लिए और ७.५ मि. लि. की बोतल ४५० मतदाताओं के लिए पर्याप्त होती है।

उक्त कंपनी इस स्याही का निर्यात सियरा लेओन, घाना, तुर्कस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, डेनमार्क, दक्षिण अफ़्रिका, मलेशिया, यू. के., फिजी द्वीपसमूह और बेनिन में करती है।

यह जानना दिलचस्प होगा कि इण्डिया इन्क, जिसे चौथी शती में मसि के रूप में जाना जाता था, जली हुई हड्डियों, तारकोल, डामर और काजल से बनती थी। आज, गोदने की स्याही में यही घटक होने की संभावना रहती है। या फिर लौह ऑक्साइड, मेटल सोल्ट्स और प्लास्टिक से बन सकती है।



टायरियन अथवा इम्पीरियल पर्पल डाय विशिष्ट प्रकार की सिप में से और रॉयल ब्लू घोंघे में से पायी जाती है। मेलेनिन ऐसी स्याही है, जिसे ऑक्टोपस से और सीपिया कपालपाद से पायी जाती है। ये लाल और गाढ़े भूरे रंग में होते हैं। सीपिया का निर्माण कटलफिश की स्याही-थैली से होता है। इसे चूर्ण के रूप में पिसा जाता है, बाद में लाख के साथ मिलाया जाता है। वास्तविक सीपिया इन्क आज भी उपलब्ध है, और इसका प्रयोग कुछ कलाकारों के द्वारा होता है।

लेक पिगमेंट का निर्माण निष्क्रिय बंधक या रंगबंधक, जोकि, मेटलिक सोल्ट होता है। कार्मिन प्रकार के लेक पिगमेंट कोषिनिल कीटक से बनते हैं।

चुकंदर, बैंगनी गाजर, हल्दी, लाल गोभी, संतरे, टमाटर, गाजर, गेंदे के फुल, पापड़ा के फल एवं गरारी से वनस्पतिक प्राकृतिक रंग निर्मित होना संभव है। तथापि, पेन्ट उत्पादक कंपनी द्वारा इन स्रोतों का प्रयोग नहीं किया जाता है। इससे भी बदतर यह है कि टट्टू के बालों को और सूअर के सफ़ेद बाल को, कलाकारों के ब्रुश के लिए बता कर बेचा जाता है।

जैन विगन व्यंजन

इस स्तंभ के अंतर्गत जैन विगन व्यंजन बनाने की विधि प्रस्तुत है। यदि आप भी कोई रेसिपी भोजना चाहते हैं, तो पत्र/ई-मेल के द्वारा भेजें। विगन से हमारा तात्पर्य यह है कि शाकाहारी लोगों की ऐसी श्रेणी, जोकि खाने-पीने में प्राणिज पदार्थ से बनी किसी भी वस्तु के प्रयोग से दूर रहते हैं।

अनार

अनार का प्रयोग आयुर्वेद में बड़े पैमाने पर होता है। इस में फॉस्फरस, सेलेनियम और विटमिन के निहित है। इस के नियमित सेवन से दिल के दौरे का खतरा कम होता है, विषाणुजनित संक्रमण की रोकथाम होती है और एन्टी-ओक्सिडेन्ट एवम् एन्टीबैक्टेरियल लाभ मिलते हैं। अतिसार और संग्रहणी के नियंत्रण में ये सहाय्यकारी पाये गये हैं।



अनार रस के सेवन के १७ लाभ

१. हृदय के स्वास्थ्य में सुधार।
२. रक्त शर्करा का स्तर बनाए रखता है।
३. रक्तचाप का स्तर बनाये रखता है।
४. कैंसर के जोखिम को कम करता है।
५. अतिसार और संग्रहणी के नियंत्रण में सहायक।
६. रोगप्रतिकारक क्षमता में सुधार।
७. रक्ताल्पता की रोकथाम।
८. पाचन में सहायक।
९. शरीर में कड़ी लचीली हड्डियों के फिर से बनने में सहायक।
१०. प्रसव पूर्व जतन में लाभदायी।
११. उम्र-प्रतिरोधक में श्रेष्ठ सहायक।
१२. त्वचा की सभी किस्म में अनुकूल।
१३. दाग-धब्बों के ठीक होने में सहायक।
१४. त्वचा संरचना में सुधार कारक।
१५. चमकती त्वचा का फेस-मास्क।
१६. त्वचा के कैंसर की रोकथाम।
१७. बाल के झड़ने को रोकता है।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया देखें:

stylecraze.com/articles/best-benefits-of-pomegranate-juice-for-skin-hair-and-health/#gref

प्रकाशक: डायना रत्नागर, अध्यक्षा, ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी - भारत
सम्पादक: भरत कापडीआ डिज़ाइन: दिनेश दाभोलकर
मुद्रण स्थल: मुद्रा, 383 नारायण पेठ, पुणे 411 030
करुणा-मित्र प्राणिज पदार्थ-रहित कागज़ पर मुद्रित किया जाता है,
और प्रत्येक बसंत (फरवरी), ग्रीष्म (मई),
वर्षा (अगस्त) एवं शिशिर (नवम्बर) में प्रकाशित किया जाता है।

© करुणा-मित्र का प्रकाशनाधिकार
ब्यूटी विदाउट क्रुएल्टी के पास सुरक्षित है।

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना किसी भी प्रकार से
किसी भी मुद्रित सामग्री की अनधिकृत प्रतिकृति करना प्रतिबंधित है।

व्यंजन

चटपट अनार

सामग्री

- ३/४ कप अनार के दाने
- १/४ चम्मच चाट मसाला
- १/४ चम्मच आमचूर पाउडर
- १/४ चम्मच जीरा पाउडर
- काला नमक,
स्वाद अनुसार

बनाने की विधि

सब सामग्री को इकट्ठा कर ठीक से मिला लें।
नोट: यदि इसे रखना चाहें तो हवाबंद टिफिनबॉक्स में पैक कर के रखें।

मूंगदाल की चाट

सामग्री

- १/२ कप पीली मूंग दाल
(मोगर मूंगदाल)
- १/२ कप अनार
नमक,
स्वाद अनुसार
- १/४ कप कच्चे आम
के टुकड़े
- २ बड़े चम्मच पुदीना
के बारीक टुकड़े
- २ बड़े चम्मच धनिया
के बारीक टुकड़े
- २ छोटे चम्मच हरी मिर्च के टुकड़े
- १ छोटा चम्मच चाट मसाला
- ४ छोटे चम्मच नीबू का रस

बनाने की विधि

पर्याप्त पानी में मूंग दाल को भिगोये, सूखने दें व पानी ठीक से बहा दें।
तीन कप पानी, मूंग दाल और नमक गहरे नॉन-स्टिक पैन में ठीक से मिला कर मध्यम आंच में आधे तक पकाएं। निरंतर हिलाते रहें। यह सुनिश्चित करें कि मूंग का एक एक दाना अलग हो। छलनी के द्वारा मूंग को छान लें और ठंडा होने के लिए १० मिनट तक अलग रखें।
सभी घटक को एक साथ मिलाएं। बड़े पात्र में उछाल कर मिलाते रहें। तुरंत परोसें।

बी.डब्ल्यू.सी. द्वारा जांचे-परखे व आस्वाद किये गए स्वादिष्ट व्यंजनों की विधि का संकलन देखने के लिए कृपया www.bwcindia.org/Web/Recipes/Recipesindex.html की मुलाकात लें।